टिप्पणी

8

संगीत पारिजात में निहित विषय-सामग्री का संक्षिप्त अध्ययन

सत्रहवीं शताब्दी ई. में पं. अहोबल के द्वारा संस्कृत में लिखा गया सांगीतिक ग्रन्थ 'संगीत पारिजात' अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। पं. अहोबल के द्वारा किया गया स्वरों का विश्लेषण विशेष रूप से उल्लेखनीय है, क्योंकि आधुनिक स्वरों की स्थापना में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान है। यद्यपि इन्होंने शास्त्रानुसार सात शुद्ध तथा बाईस विकृत स्वर बताये हैं, फिर भी क्रियात्मक प्रयोग की दृष्टि से वीणा के तार पर सात शुद्ध एवं पाँच विकृत स्वरों को स्थापित किया है। ऐसा करने से न केवल स्वरों की आन्दोलन संख्या की गणना के मापदंड स्थापित हुए, अपितु भिन्न नाम से युक्त वस्तुतः समान स्वर हट गये परन्तु इनका शुद्ध स्वर सप्तक आधुनिक काफी के समान था। इस अद्‌भुत ग्रन्थ की महत्ता इस तथ्य से उजागर होती है कि वर्ष 1724 ई. में इसका फ़ारसी मे अनुवाद किया गया, जिसकी प्रति रामपुर रज़ा पुस्तकालय, रामपुर में उपलब्ध है।

संगीत पारिजात एक बृहत् ग्रन्थ है, जिसमें 708 श्लोक हैं। इसमें दो भाग हैं। पहला भाग राग गीत विचार काण्ड है तथा द्वितीय भाग वाद्य ताल काण्ड है।

उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात् आप–

- संगीत पारिजात के दो भागों का नाम उल्लेख कर सकेंगे;
- संगीत पारिजात में दी गई सांगीतिक अवधारणाओं का वर्णन कर सकेंगे;
- पं. अहोबल के योगदान का विवरण दे सकेंगे; और
- पं. अहोबल के योगदानों का आधुनिक हिन्दुस्तानी संगीत पर प्रभाव का वर्णन कर सकेंगे।

टिप्पणी

8.1 संगीत पारिजात की विषय सामग्री

संगीत पारिजात के 708 श्लोक दो भागों में संग्रहीत हैं। प्रथम भाग **'राग गीत विचार कांड'** तथा द्वितीय भाग **'वाद्य ताल कांड'** कहलाता है। **'राग गीत विचार कांड'** के अंतर्गत स्वर प्रकरण (श्रुति एवं स्वर का विवरण), ग्राम लक्षण (ग्राम का विवरण), मूर्च्छना का विवरण, मूर्च्छना एवं स्वर प्रस्तार, वर्ण लक्षण (वर्णों का विवरण), जाति निरुपण (जाति तथा राग का विवरण), राग प्रकरण (रागों का विवरण), तत्पश्चात् प्रबन्ध का विवरण, वाग्गेयकार के लक्षण, गायन में गुण तथा दोष सम्मिलित हैं। **वाद्य ताल कांड** के अंतर्गत वाद्यों का वर्गीकरण, उनका वर्णन, वादन का तरीका, वादकों के लक्षण एवं ताल के प्राचीन तत्त्वों का समावेश है।

8.2 राग गीत विचार कांड

8.2.1 श्रुति एवं स्वर का विवरण

स्वर प्रकरण का आरम्भ वे मंगलाचरण से करते हैं। आगे वे कहते हैं कि संगीत का प्रभाव यज्ञ अथवा दान से बढ़कर होता है। संगीत को उन्होंने पं. शार्ङ्गदेव के समान ही परिभाषित किया है, जिसमें गीत, वाद्य एवं नृत्य को सम्मिलित रूप से संगीत कहा गया है। इनमें गायन को प्रमुख बताया है।

उन्होंने संगीत के दो प्रकार, **मार्गी** एवं **देशी** दिये हैं। तत्पश्चात् नाद के उद्गम के विषय में उन्होंने उल्लेख किया है कि वह अग्नि तथा वायु के संयोग से हृदय में स्थित तंत्रिका केंद्र (चक्र) से उत्पन्न होता है। मंद्र, मध्य व तार का उद्गम गले के 'विशुद्ध चक्र' एवं मस्तिष्क के 'सहस्र चक्र' द्वारा होता है।

श्रुति एवं **स्वर** में अंतर बताते हुए वे कहते हैं कि श्रुति का हेतु सुनने में है, परन्तु वह स्वर से पृथक नहीं है। **स्वर** एवं **श्रुति** का अंतर सर्प व उसकी कुंडली के समान है। जहाँ सर्प स्वर है तथा श्रुति कुंडली। आगे वे स्पष्ट करते हैं कि श्रुतियाँ रागों में स्वर बन जाती हैं तथा उनका हेतु राग बन जाता है, अतः **'श्रुति'** नाम उचित है।

तत्पश्चात् वे बाईस श्रुतियों का वर्णन करते हैं। फिर वे स्वरों पर आते हैं। उन्होंने सात शुद्ध तथा बाईस विकृत, कुल उनत्तीस स्वरों का उल्लेख किया है। 'सा', 'म' तथा 'प' प्रत्येक की चार श्रुतियाँ, 'ग' तथा 'नि' की दो एवं 'रे' तथा 'ध' की तीन श्रुतियाँ बताई हैं।

विकृत स्वरों के लिये उन्होंने विविध संज्ञाओं का प्रयोग किया है, जैसे **तीव्र, तीव्रतर, तीव्रतम, कोमल, पूर्व, साधारण, काकली** तथा **कैशिक**। आगे वे पूर्व विद्वानों की ही भांति चतुर्विध स्वर वादी, संवादी, अनुवादी एवं विवादी तथा स्वरों के देवता, कुल, जाति, वर्ण, रस एवं ऋषि का भी उल्लेख करते हैं।

8.2.2 ग्राम का विवरण

ग्राम लक्षण के अंतर्गत अहोबल 'ग्राम' की चर्चा करते हैं। इसे वे स्वरों के समूह की

टिप्पणी

भांति परिभाषित करते हैं तथा तीन ग्रामों का उल्लेख करते हैं जिनके नाम हैं – षड्ज, मध्यम एवं गंधार। रागों में प्रयोग के लिये केवल दो, यथा – षड्ज एवं मध्यम को पर्याप्त माना है। रागों की उत्पत्ति **षड्ज ग्राम** से मानी है।

8.2.3 मूर्च्छना का विवरण

ग्राम लक्षण के पश्चात् वे **'मूर्च्छना'** की चर्चा करते हैं। इसे वे ग्राम के अंतर्गत स्वरों का आरोह एवं अवरोह के रूप में परिभाषित करते हैं। **षड्ज ग्राम** की सात प्रकार की मूर्च्छनायें दी गई हैं। तत्पश्चात् भरत्, शार्ङ्गदेव, मतंग एवं नारद जैसे पूर्व विद्वानों की भांति मध्यम और गंधार ग्रामों में प्रत्येक की सात मूर्च्छनायें दी हैं। इनके संयोजन भी बताये हैं। आगे वे मूर्च्छनाओं के आधार पर निर्मित तानों का उल्लेख करते हैं।

8.2.4 मूर्च्छना एवं स्वर प्रस्तार

इस अध्याय में वे खंड-मेरू पद्धति के द्वारा स्वरों के संयोजन का वर्णन करते हैं।

8.2.5 वर्ण लक्षण

इस अध्याय में वे चतुर्विध वर्णों की गणना करते हैं, जिनके नाम हैं- **स्थायी, आरोही, अवरोही** तथा **संचारी।** अलंकारों में वे स्थायी वर्ण के आधार पर सात, आरोही के आधार पर बारह, अवरोही के आधार पर बाहर तथा संचारी वर्ण के आधार पर अड़तीस का उल्लेख करते हैं।

8.2.6 जाति निरूपण

जातियों से संबद्ध इस अध्याय में वे सात शुद्ध जातियों का वर्णन करते हैं, यथा – **षाड्जी, आर्षभी, गांधारी, मध्यमा, पंचमी, धैवती** तथा **नैषादी।** तत्पश्चात् वे विभिन्न गमकों का उल्लेख करते हैं। फिर वे वीणा पर स्वरों की स्थापना करते हैं। आगे वे पाँच गीतियों का उल्लेख करते हैं, यथा- **शुद्धा, भिन्ना, गौडी, वेसरा** तथा **साधारणी।** वे इनके लक्षणों का वर्णन करते हैं। फिर वे रागों पर आते हैं। उन्होंने 122 रागों का उल्लेख किया है। राग को वे स्वरों का एक रंजक संदर्भ बताते हैं। रागों के गायन समय का भी वे उल्लेख करते हैं।

8.2.7 राग प्रकरण

राग प्रकरण में वे रागों का विवरण देते हैं। अंत में वे उन दस स्वरों का उल्लेख करते हैं, जिनका प्रयोग दिये गये रागों में नहीं हुआ है, जिससे प्रयुक्त स्वरों की संख्या उन्नीस रह जाती है। वस्तुतः उन्होंने केवल सात शुद्ध एवं पाँच विकृत स्वरों का ही उपयोग किया हैं, क्योंकि शेष स्वरों में से अधिकतर का केवल नाम अलग है, स्थान वही है।

टिप्पणी

8.2.8 प्रबन्ध का विवरण

राग प्रकरण के पश्चात् वे प्रबन्ध की चर्चा करते हैं। इसके अंतर्गत वे प्रबन्ध के पाँच धातुओं (जिन्हें उन्होंने भाग कहा है), यथा – **उद्ग्राह, मेलापक, ध्रुव, अंतरा, आभोग** एवं छह अंगों, यथा – **पद, ताल, स्वर, पाट, तेन** तथा **बिरुद्ध** की गणना करते हैं। उन्होंने प्रबन्धों के तीन प्रकारों का वर्णन किया है, यथा– **सूड, आलि** एवं **विप्रकीर्ण**। तत्पश्चात् वे वाग्गेयकार के लक्षण व गायन के गुण तथा दोष बताते हैं।

पाठगत प्रश्न 8.1

1. **संगीत पारिजात** कब लिखा गया?
2. पं. अहोबल ने वीणा के तार पर कितने शुद्ध तथा विकृत स्वर स्थापित किये?
3. संगीत पारिजात का शुद्ध सप्तक किस आधुनिक सप्तक के समान है?
4. संगीत पारिजात में कितने श्लोक हैं?
5. मूर्च्छना एवं स्वर प्रस्तार के अंतर्गत पं. अहोबल स्वरों के संयोजन की किस पद्धति की चर्चा करते हैं?
6. संगीत पारिजात में दिये गये चतुर्विध वर्णों के नाम बताइये।
7. संचारी वर्ण के आधार पर पं. अहोबल ने कितने अलंकारों का उल्लेख किया है?
8. संगीत पारिजात में दी गई सात शुद्ध जातियों के नाम बताइये।
9. संगीत पारिजात में दी गई पाँच गीतियों के नाम बताइये।
10. संगीत पारिजात में कितने रागों का उल्लेख हुआ है?
11. संगीत पारिजात के अनुसार प्रबन्ध के पाँच भाग क्या हैं?

8.3 वाद्य ताल कांड

द्वितीय भाग के अंतर्गत पं. अहोबल चार भिन्न प्रकार के संगीत वाद्य, यथा– **तत, आनद्ध, सुषिर** तथा **धन** का वर्णन करते हैं। तत अर्थात् तंत्री वाद्यों के अंतर्गत वे आठ प्रकार की वीणाओं की चर्चा करते हैं। आनद्ध अथवा ताल वाद्य जिन्हें थाप देकर

टिप्पणी

बजाया जाये आठ बताये हैं, दस प्रकार के सुषिर अर्थात् वायु के प्रयोग से बजने वाले वाद्य बताये हैं एवं बारह प्रकार के घन अथवा धातु से निर्मित वाद्य बताये हैं। तत्पश्चात् वे ताल के दशविध प्राचीन तत्त्व 'ताल दशप्राण' का वर्णन करते हैं, यथा, **काल, मार्ग, क्रिया, अंग, ग्रह, जाति, कला, लय, यति एवं प्रस्तार**।

8.4 पं. अहोबल के योगदान एवं उनका आधुनिक हिन्दुस्तानी संगीत पर प्रभाव

आधुनिक हिन्दुस्तानी संगीत को आकार देने में पं. अहोबल ने निम्न रूप से महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है

1. **अनावश्यक स्वरों का त्यागना**–मूलतः उन्होंने उनत्तीस स्वरों का उल्लेख किया है। चूँकि कई स्वरों का स्थान एक ही है परन्तु नाम अलग हैं, अतः मूल सात शुद्ध व बाईस विकृत स्वरों के स्थान पर उन्होंने रागों के वर्णन में केवल सात शुद्ध व पाँच विकृत स्वरों का प्रयोग किया है।

2. **वीणा के तार पर स्वरों की स्थापना**– यद्यपि विस्तारपूर्वक नहीं, फिर भी उन्होंने वीणा के तार के माध्यम से स्वरों के स्थान को प्रदर्शित किया है।

3. **स्वरों की कंपन संख्या के परिकलन हेतु वैज्ञानिक परिमाण प्रस्तुत करना** – स्वरों के मध्य दूरी को प्रत्यक्ष रूप से प्रदर्शित करने से स्वरों की कंपन संख्या के परिकलन हेतु परिमाण प्रस्तुत हो पाये।

पाठगत प्रश्न 8.2

1. पं. अहोबल के द्वारा वर्णित चतुर्विध वाद्यों के नाम बताइये।
2. उन्होंने कितने प्रकार की वीणाओं का उल्लेख किया है?
3. उन्होंने थाप देकर बजाये जाने वाले ताल वाद्य कितने बताये हैं?
4. **संगीत पारिजात** में दिये गये ताल के दशविध प्राचीन तत्त्व क्या हैं?
5. पं. अहोबल ने वीणा के तार पर कितने स्वरों की स्थापना की?
6. पं. अहोबल के द्वारा मूल रूप से कितने स्वरों का उल्लेख किया गया है?
7. पं. अहोबल ने स्वरों की कंपन संख्या के परिकलन के लिये माध्यम किस प्रकार प्रस्तुत किया है?
8. पं. अहोबल ने कितने ग्रामों का उल्लेख किया है?

टिप्पणी

आपने क्या सीखा

पं. अहोबल कृत संगीत पारिजात मध्यकालीन संगीत से संबन्धित महत्त्वपूर्ण संस्कृत ग्रंथों में गणमान्य है। यह प्राचीन तथा आधुनिक समय में प्रचलित संगीत को जोड़ने वाली कड़ी का कार्य करता है। आधुनिक संदर्भ से इनके द्वारा प्रस्तुत स्वरों का विश्लेषण विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इनके द्वारा दिया गया श्रुति और स्वर में भेद अनोखा है। इन्होंने संगीत की कुछ महत्त्वपूर्ण अवधारणाओं को एक व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक तरीके से प्रस्तुत किया है।

पाठांत प्रश्न

1. पं. अहोबल श्रुति और स्वर में भेद किस प्रकार बताते हैं?
2. संगीत पारिजात में स्वरों के विश्लेषण की चर्चा कीजिये। आधुनिक संदर्भ में यह किस प्रकार उल्लेखनीय है?
3. संगीत पारिजात में दी गई ग्राम एवं मूर्च्छना की अवधारणा की चर्चा कीजिये।
4. संगीत पारिजात के अनुसार प्रबन्ध की चर्चा कीजिये।
5. पं. अहोबल के योगदानों तथा आधुनिक हिन्दुस्तानी संगीत पर उनके प्रभाव का विवरण दीजिये।
6. संगीत पारिजात के वाद्य ताल कांड की चर्चा कीजिये।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

8.1

1. सत्रहवीं शताब्दी ई.।
2. सात शुद्ध एवं पाँच विकृत स्वर।
3. काफी।
4. 708।
5. खण्ड–मेरू।
6. स्थायी, आरोही, अवरोही, संचारी।

टिप्पणी

7. अड़तीस।
8. षाड्जी, आर्षभी, गांधारी, मध्यमा, पंचमी, धैवती, नैषादी।
9. शुद्धा, भिन्ना, गौड़ी, वेसरा, साधारणी।
10. 122
11. उद्ग्राह, मेलापक, ध्रुव, अंतरा, अभोग।

8.2

1. तत, आनद्ध, सुषिर, घन।
2. आठ।
3. आठ।
4. काल, मार्ग, क्रिया, अंग, ग्रह, जाति, कला, लय, यति, तथा प्रस्तार।
5. बारह।
6. उनत्तीस।
7. वे स्वरों के मध्य दूरी को प्रत्यक्ष रूप से प्रदर्शित करते हैं।
8. तीन।

पारिभाषिक शब्दावली

1. मध्य – गले से उत्पन्न।
2. मंद्र – गले के नीचे से उत्पन्न।
3. मंगलाचरण – ईश्वर का आह्वान।
4. नाद – नियमित कंपनों से युक्त ध्वनि।
5. राग – हिन्दुस्तानी संगीत का सांगीतिक अनुक्रम विन्यास।
6. श्रुति – संगीत की लघुतम इकाई जो सुनी जा सके।
7. स्वर – नोट, राग में रंजकता एवं अनुरणनात्मकता प्राप्त करने पर श्रुतियों का स्वरूप।
8. तार – मस्तिष्क से उत्पन्न।